INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 2, February 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

वैश्वीकरण, नई अर्थव्यवस्था एवं स्थानीय भाषाएँ

डॉ. भाऊसाहेब एन. नवले
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
लोकनेते डॉ. बाळासाहेब विखे पाटील (पद्मभूषण उपाधि से सम्मानित)
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, सात्रळ,तहसील-राहुरी, जिला-अहिल्यानगर
e-mail-drbhausahebnavale@gmail.com,

शोध सारांश :

इक्कीसवीं सदी का वैश्विक परिदृश्य बहुआयामी परिवर्तनों से पर्याप्त मात्रा में प्रभावित दृष्टिगोचर होता है। विचारणीय है कि सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं तकनीकी स्तर पर तीव्र गति के साथ परिवर्तन परिलक्षित हो रहा है। नई अर्थव्यवस्था के प्राणवायू के रूप में भाषा का अनन्यसाधारण महत्त्व स्पष्ट रूप में उजागर हो रहा है।भाषा केवल संप्रेषण एवं संवाद का माध्यम न रहकर वह आर्थिक संसाधन, सांस्कृतिक पूँजी और सामाजिक सशक्तीकरण के मुख्य साधन के रूप में स्वयं का अस्तित्व सिद्ध कर रही है। कहना गलत न होगा कि नई अर्थव्यवस्था को समृद्ध एवं सुदृढ़ बनाने में भाषा की भूमिका रीढ़ की हड्डी की तरह दायित्व वहन करती हुई परिलक्षित होती है।प्रस्तुत शोधालेख में वैश्वीकरण के संदर्भ में नई अर्थव्यवस्था की प्रकृति, नई अर्थव्यवस्था को उन्नत बनाने में स्थानीय भाषाओं की भागीदारी एवं आर्थिक समावेशन, डिजिटल भागीदारी, नवाचार एवं ज्ञान विस्तार और सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा, भारतीय स्थानीय भाषाएँ, भाषा प्रयोग एवं चुनौतियाँ तथा संभावनाएँ आदि को केंद्र में रखा है। निष्कर्ष एवं तथ्य रूप कहा जा सकता है कि विकास की प्रक्रिया को जनोन्मुख एवं शाश्वत बनाने की दृष्टि से स्थानीय भाषाओं को नई अर्थव्यवस्था की केंद्रीय धारा में स्थान देना आवश्यक प्रतीत होता है।

बीज शब्द :वैश्वीकरण, नई अर्थव्यवस्था, स्थानीय भाषाएँ, भाषा और विकास, डिजिटल समावेशन, केंद्रीय धारा

विषय प्रवेश :

परिवर्तन समाज की उन्नति की नींव होता है।इक्कीसवीं सदी के आमूलचूल परिवर्तन केंद्री परिदृश्य को वैश्वीकरण का ही परिणाम कहा जा सकता है। कभी एक समय था जब हमें आज के आविष्कार साकार रूप में होने की आशंका दृष्टिगत होती थी। लेकिन वैश्वीकरण एवं भूमंडलीकरण के व्यापक एवं अनिवार्य प्रभाव से कोई भी क्षेत्र अलक्षित नहीं रहा है।उसके प्रभाव को लेकर आज भी पर्याप्त मात्रा में मतभिन्नता अवश्यदृष्टिगोचर होती है। जिसमें सकारात्मक एवं नकारात्मक दृष्टिकोण परिलक्षित होता है। बावजूद आम वैश्विक जन के चाहने न चाहने पर भी वैश्वीकरण के अनिवार्य प्रभाव एवं बदलाओं को हर

किसी ने स्वीकार ही किया।वैश्वीकरण का ही परिणाम है कि आज संपूर्ण विश्व 'वैश्विक ग्राम' में परिवर्तित हो रहा है, जहाँ आर्थिक गतिविधियाँ मात्र किसी राष्ट्रीय सीमा के केंद्र में नहीं है बल्कि उसका संचालन भी वैश्विक स्तर पर विश्वव्यापी हो रहा है।

इस प्रक्रिया में चिकित्सा, कृषि, व्यापार, बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ, डिजिटल प्लेटफॉर्म, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ई-कॉमर्स और ज्ञान-आधारित उद्योग नई अर्थव्यवस्था की पहचान बन चुके हैं।ध्यातव्य है कि इस वैश्विक प्रवाह में भाषा की भूमिका अनन्यसाधारण महत्त्व रखती है। अक्सर कहा जाता है कि इस वैश्विक प्रभावकेंद्री माहौल में अँग्रेजी जैसी भाषा वैश्विक प्रभुत्व स्थापित कर रही है, जबकि राष्ट्रीय एवं स्थानीय भाषाएँ हाशिए पर चली जा रही है। यह स्थिति केवल भाषायी असंतुलन ही नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक असमानता को भी जन्म देती है। लेकिन विचारणीय है कि वर्तमान में भले ही अन्य राष्ट्रीय एवं स्थानीय भाषाएँ वैश्विक स्तर पर स्वयं को पूर्णता सिद्ध करने में असमर्थ अवश्य है लेकिन वैश्विक बाजार की आवश्यकता के रूप में तो स्थानीय भाषाओं को अनिवार्य रूप में महत्त्व देना ही होगा इसमें संदेह नहीं है।नई अर्थव्यवस्था को समृद्ध बनाने में भाषा की भूमिका रीढ़ की हड्डी की तरह काम करती है, इस बात को स्वीकार करना पड़ेगा।प्रस्तुत शोधालेख में मैंने निम्न बिंदुओं के माध्यम से वैश्वीकरण और नई अर्थव्यवस्था, स्थानीय भाषाका महत्त्व, नई अर्थ व्यवस्था में स्थानीय भाषा की भूमिका, डिजिटलायजेशन एवं स्थानीय भाषाएँ तथा चुनौतियाँ एवं संभावनाओं को विश्लेषित करने का प्रयास किया है-

वैश्वीकरण और नई अर्थव्यवस्था :

नई अर्थव्यवस्था से तात्पर्य उस व्यवस्था से है जो पारंपरिक आर्थिक संरचना से भिन्न परिलक्षित होती है। इसमें सूचना, ज्ञान, नवाचार, तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी का प्रभाव पर्याप्त मात्रा में दृष्टिगोचर होता है।पाश्चात्य विचारक एल्विन टॉफ़लर का मानना है कि "In the global economy, the winners will be those who can learn, unlearn and relearn।"[1] अर्थात (वैश्विक अर्थव्यवस्था में, वही लोग सफल होंगे जो सीख सकते हैं, पुरानी बातों को भूल सकते हैं और नई बातें सीख सकते हैं।) स्पष्ट है कि वैश्वीकरण केंद्रित अर्थव्यवस्था में वही लोग सफलता हासिल कर सकते हैं, जो नया सीखना चाहते हैं, जो अनावश्यक को भूल सकते हैं और जिनमें नए को सहर्ष स्वीकारने का जूनून है। इस सिलसिले में व्यवसायिकों को अपने भाषिक संप्रेषण के विकास में स्थानीय भाषाओं को सिखने की अनिवार्यता को भी नकारा नहीं जा सकता।नई अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषताओं के रूप में डिजिटल तकनीकी का व्यापक प्रयोग, सेवा क्षेत्र

का असीम विस्तार, ज्ञान एवं कौशल का अर्थकेंद्री महत्त्व तथा वैश्विक बाजार से प्रत्यक्ष जुड़ाव आदि का मुख्यतः उल्लेख किया जा सकता है। डॉ. भाऊसाहेब नवले का कहना है कि भूमंडलीकरण तथा वैश्वीकरण के चलते हिंदी भाषा को अपनी जमीन से दूर कटते रहने की बात अक्सर की जाती है। यदि हम सिर्फ हिंदी फिल्मों का ही जिक्र करें तो हम पाते हैं कि अँग्रेजी की हिंदी फिल्मों की डबिंग के बाद तथा हिंदी मूल फिल्मों से भी वैश्विक आय में वृद्धि होती नजर आती है।[2] कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण के प्रभाव तथा भाषिक प्रभाव से प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में वैश्विक एवं राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था सुदृढ होती परिलक्षित होती है।

वैश्वीकरण के व्यापक एवं सुदूर प्रभाव एवं परिणामों का ही नतीजा है कि डिजिटल तकनीकी के कारण अर्थव्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन हो रहा है। देश-विदेश के किसी भी कोने में बैठा हुआ व्यक्ति तकनीकी सुविधाओं के कारण अपने समय एवं धन की बचत के साथ घर बैठे आर्थिक आदान-प्रदान कर रहा है।तकनीकी का ही परिणाम है कि सेवा क्षेत्र ने पूरे विश्व में अपनी जड़ें जमा दी है। वैश्वीकरण के चलते मुफ्त की कल्पना मात्र कल्पना ही रह गई है। बिना कुछ खरीदे आपको कुछ भी मुफ्त मिलने की आकांक्षा मात्र अपने ही मन को समझाने जैसा है।ज्ञान की संकल्पना के बारे में अक्सर कहा जाता है कि ज्ञान बाँटने से बढ़ता है, लेकिन वैश्वीकरण के ज़माने में ज्ञान बाँटने के लिए नहीं बल्कि अर्थार्जन का साधन बन गया है। कहना समीचीन होगा कि वैश्वीकरण के ज़माने में ज्ञान एवं कौशल का अर्थकेंद्री महत्त्व बढ़ता जा रहा है।दुनिया का कोई भी व्यक्ति किसी भी कारण से वैश्विक बाजार से बिना किसी के बीच-बचाव के सहज जुड़ सकता है इसमें दो राय नहीं हैं।वैश्वीकरण की मुख्य कड़ी के रूप में भाषा की अहम भूमिका परिलक्षित होती है। कहना गलत नहीं होगा कि जो समुदाय भाषा के कारण वैश्विक धारा एवं बाजार से कट जाता है, वह आर्थिक रूप से भी पिछड़ जाता है। किसी समुदाय का आर्थिक रूप से पिछड़ जाना किसी भी राष्ट्र के पिछड़ेपन का कारण हो सकता है ।

स्थानीय भाषाएँ: अर्थ और महत्त्व :

दुनिया में भारत की भाषिक विविधता अनन्यसाधारण महत्त्व रखती है। कहना सही होगा कि स्थानीय भाषाएँ इस विविधता के केंद्र में स्थित हैं। वस्तुतः स्थानीय भाषाएँ सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान का मूल स्रोत हैं। स्थानीय भाषा किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र, समुदाय या सांस्कृतिक समूह की वह स्वाभाविक अभिव्यक्ति है, जो सामुदायिक अनुभवों, सांस्कृतिक स्मृतियों तथा पारंपरिक ज्ञान का संचित

भंडार होती है। भाषाविद गणेश देवी का कहना है कि, "स्थानीय भाषाएँ किसी समुदाय की सांस्कृतिक आत्मा तथा स्मृति-संरचना को संरक्षित रखती हैं"[3]दृष्टव्य कथन से विदित होता है कि किसी भी राष्ट्र कि सांस्कृतिक विरासत को सहजने एवं संरक्षित करने का काम स्थानीय भाषा समुदाय के माध्यम से होता है। इसलिए किसी भी समय में चाहे वैश्वीकरण का समय हो या 21 वीं सदी का, स्थानीय भाषाओं का अपना अनन्यतम महत्त्व नकारा नहीं जा सकता।'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' में पंडित जवाहरलाल नेहरु ने कहा है कि भारत की भाषाएँ "सांस्कृतिक एकता की वास्तविक वाहक हैं, न कि केवल संवाद का साधन"[4] स्पष्ट है कि भाषा के प्रति आम धारणा यह थी कि भाषा मात्र संवाद का साधन हैं तथा उसके माध्यम से मात्र विचारों का आदान-प्रदान ही होता है। जब कि भाषा सांस्कृतिक एकता को सहजने में तथा उसे समृद्ध विरासत के रूप में परिचित करवाने की दृष्टि से वाहक के रूप में दायित्व वहन करती दृष्टिगोचर होती है।स्थानीय भाषाएँ पारंपरिक ज्ञान, कृषि-अनुभव, औषधीय परंपराओं और लोकविज्ञान को संरक्षित करती हैं, जिन्हें आधुनिक वैज्ञानिक भाषा में सम्यक् रूप से रूपांतरित करना कठिन होता है।

स्पष्ट है कि स्थानीय भाषाएँ केवल संवाद एवं संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि ज्ञान-परंपरा, सांस्कृतिक निरंतरता, सामाजिक पहचान तथा लोकतांत्रिक सहभागिता की आधारशीला हैं। स्थानीय भाषाएँ किसी भी समाज की सांस्कृतिक स्मृति, लोकज्ञान और सामूहिक अनुभव की वाहक होती हैं। ये भाषाएँ जनसामान्य को विकास प्रक्रिया से जोड़कर पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करती हैं तथा सामाजिक सहभागिता और लोकतांत्रिक संवाद को सशक्त बनाती हैं। नई अर्थव्यवस्था में स्थानीय भाषाओं का उपयोग रोजगार, उद्योग, व्यापार और डिजिटल साक्षरता को व्यापक आधार प्रदान कर सकता है।

नई अर्थव्यवस्था में स्थानीय भाषाओं की भूमिका :

वैश्वीकरण और तकनीकी आधारित नई अर्थव्यवस्था में स्थानीय भाषाओं की प्रासंगिकता एवं महत्त्व दिन-ब- दिन बढ़ता जा रहा है। नई अर्थव्यवस्था के केंद्र में ज्ञान-संचार, उपभोग-व्यवहार, डिजिटल सहभागिता और नवाचार है, जहाँ भाषा केवल बाजार-संचार का माध्यम नहीं है, बल्कि उपभोक्ता वर्ग एवं समुदाय की सांस्कृतिक पहचान का निर्धारक भी बन गई है। अर्थविद अमर्त्य सेन का मानना है कि विकास की वास्तविक प्रक्रिया "सांस्कृतिक तथा भाषाई सहभागी आधार की व्यापकता"[5]पर निर्भर करती है।स्थानीय भाषाएँ नई अर्थव्यवस्था में समावेशन के महत्त्वपूर्ण साधन के रूप में स्वयं को सिद्ध करती है। कहा जा सकता है कि किसी भी राष्ट्र की महत्ता उस राष्ट्र के विकास की गति एवं विकास की धारा पर

निर्भर करती है। उसी विकास की वास्तविक प्रक्रिया की नींव सांस्कृतिक एवं भाषाओं की विकास प्रक्रिया में निहित भागीदारी होती है। कहना जरुरी नहीं की स्थानीय भाषाओं के अभाव में किसी भी प्रकार के विकास की संभावना न के बराबर परिलक्षित होती है।डिजिटल अर्थव्यवस्था के विस्तार में स्थानीय भाषाओं की निर्णायक भूमिका को स्वीकार करना होगा। "स्थानीय भाषाएँ डिजिटल बाजार की पहुँच को कई गुना बढ़ाती हैं क्योंकि वे उपभोक्ता-संस्कृति से प्रत्यक्ष रूप से संवाद करती हैं"[6]द्रष्टव्य उद्धरण से स्पष्ट होता है कि भारत में मोबाइल-आधारित सेवाओं, ई-कॉमर्स, ऑनलाइन बैंकिंग, एग्री-टेक, कृषि संबंधी एप, घरेलु कामकाज से संबंधित एप और हेल्थ-टेक प्लैटफॉर्म तेजी से स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध हो रहे हैं, जिससे डिजिटल समावेशन संभव हो पाया है।स्थानीय भाषाएँ उद्यमिता तथा कौशल-विकास को भी सुलभ बनाती हैं। स्थानीय भाषाएँ बाजार-व्यवहार को सांस्कृतिक रूप से अधिक उचित बनाती हैं। केलनर का कहना है कि "लोकलाइज़्ड भाषा उपभोक्ता-विश्वास और ब्रांड-निष्ठा को सुदृढ़ करती है"[7]इसलिए कंपनियाँ भी अब बहुभाषीय संचार प्रयोग को अपनाने लगी हैं।

स्पष्ट है कि नई अर्थव्यवस्था में स्थानीय भाषाएँ केवल सांस्कृतिक अस्तित्व की प्रतीक नहीं, बल्कि डिजिटल पहुँच, आर्थिक अवसरों तथा लोकतांत्रिक भागीदारी की शक्तिशाली वाहक हैं। इस प्रकारभारत के आर्थिक विकास की सतत् प्रक्रिया में स्थानीय भाषाएँ अनिवार्य भूमिका निभाती हैं।

डिजिटलायजेशन एवं स्थानीय भाषाएँ :

हम इस बात से परिचित है कि कोई भी डिजिटल प्लेटफॉर्म यदि किसी विशिष्ट वैश्विक भाषा तक सीमित रहता है तो अत्यधिक जन उस भाषा ज्ञान के अभाव में उस प्लेटफार्म के प्रयोग से वंचित रह जाएगा। एक समय था जब इंटरनेट की भाषा के रूप में सिर्फ अँग्रेजी का प्रयोग होता था अर्थात जिसे ज्ञान की भाषा कहा जाता था। लेकिन तकनीकी क्रांति के चलते अंतर्जाल पर स्थानीय भाषाओं की उपस्थिति एवं दस्तक भी सूचना क्रांति का परिणाम है।भारत जैसे बहुभाषी देश में मराठी, हिंदी, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, राजस्थानी, उड़िया, भोजपुरी तथा तमिल जैसी अन्यान्य स्थानीय भाषाएँ विकास का आधार बन सकती हैं। शिक्षा नीति 2020 , डिजिटल इंडिया और आत्मनिर्भर भारत जैसे कार्यक्रमों में स्थानीय भाषाओं को प्राथमिकता देना इस दिशा में सकारात्मक पहल कही जा सकती है।

भारतीय भाषाओं में तकनीकी, व्यवसायिक और उच्च शिक्षा का विस्तार नई अर्थव्यवस्था में व्यापक स्तर पर अपनी सहभागिता दर्ज कर सकता है।वैश्विक प्लेटफार्म पर स्थानीय भाषाओं में डिजिटल सामग्री

उपलब्ध होने सेई-गवर्नेंस सुलभ होगा, किसी भी भाषा एवं प्रदेश का उपभोक्ता अपनी भाषा के माध्यम से आवश्यक जानकारी कृषि, चिकित्सा, रिक्तियाँ तथा विभिन्न योजनाओं की जानकारी सहज रूप में प्राप्त कर सकता है।ऑनलाइन शिक्षा का विस्तार व्यापक रूप में हो रहा है। जो ऑनलाइन प्लेटफार्म सिर्फ किसी विशिष्ट वर्ग की बपौती थी, आज वह एकाधिकार शाही ख़त्म होती जा रही है।डिजिटल शिक्षा में भी स्थानीय भाषाओं की निर्णायक भूमिका है। यूनेस्को के एक रिपोर्ट में कहा गया है कि "मातृभाषा-आधारित डिजिटल शिक्षा, संज्ञानात्मक समझ, अवधारणात्मक स्पष्टता और दीर्घकालिक अधिगम को अधिक सक्षम बनाती है"[8] विचारणीय है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने भी डिजिटल सामग्री को स्थानीय भाषाओं में विकसित करने पर विशेष बल दिया है।यही कारण है कि ग्रामीण और वंचित वर्ग डिजिटल अर्थव्यवस्था से व्यापक मात्रा में जुड़ता जा रहा है। डिजिटलायजेशन ने ज्ञान-प्रसार, आर्थिक गतिविधियों, शासन-प्रक्रियाओं और सामाजिक संचार की संरचना को मूलतः परिवर्तित किया है। इस परिवर्तन में स्थानीय भाषाएँ केवल संप्रेषण का माध्यम भर नहीं हैं, बल्कि डिजिटल समावेशन की अनिवार्य शर्त हैं।स्थानीय भाषाओं में कंटेंट निर्माण, अनुवाद, मीडिया, विज्ञापन और डिजिटल मार्केटिंग जैसे क्षेत्रों में नए रोजगार के अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। स्थानीय भाषाओं में ज्ञान का सृजन और नवाचार स्थानीय आवश्यकताओं से जोड़ते हैं। इससे 'लोकल से ग्लोबल'विकास के मॉडल को बल मिल रहा है। कहना गलत न होगा कि भाषाएँ स्वयं आर्थिक संसाधन के रूप में अपना अस्तित्व सिद्ध कर रही है।स्पष्ट है कि डिजिटलायजेशन की सफलता तकनीकी ढाँचों पर नहीं, बल्कि उन भाषिक माध्यमों पर निर्भर करती है जिनके द्वारा नागरिकों तक डिजिटल सुविधाएँ पहुँचती हैं। अतः कहा जा सकता है कि स्थानीय भाषाएँ डिजिटल लोकतंत्रीकरण, रोजगार, नवाचार,समावेशन और शाश्वत विकास की प्रक्रिया में ऊर्जा का मुख्य स्रोत है।

चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ :

वैश्वीकरण और नई अर्थव्यवस्था के सूत्रपात ने वैश्विक भाषिक एवं सांस्कृतिक संरचना में आमूलचूल परिवर्तन ला दिया है । जहाँ एक ओर वैश्विक बाज़ार, डिजिटलीकरण और तकनीकी प्रगति ने नए संप्रेषण से संबंधित नए मॉडल विकसित किए, वहीं दूसरी ओर स्थानीय भाषाओं के समक्ष अस्तित्व, मानकीकरण और उपयोगिता की नई चुनौतियाँ खड़ी हुईं है । वैश्वीकरण के दौड़ में भारतीय भाषाएँ अपना अस्तित्व सिद्ध करने के लिए प्रयासरत है लेकिन कुछ भाषाएँ हाशिए पर जाने का डर भी चिंता का विषय बनता जा रहा है।डिजिटल प्लेटफॉर्म पर स्थानीय भाषाओं में सामग्री की कमी तकनीकी पहुँच को बाधित करती है।

ग्रामीण एवं वंचित समूह प्रायः भाषाई बाधाओं के कारण डिजिटल सेवाओं का नहीं उठा सकता।स्थानीय भाषाओं का मानकीकरण, कोश निर्माण कार्य और तकनीकी अनुकूलन अभी भी धीमी गति से हो रहा है।

बावजूद इसके नई अर्थव्यवस्था एवं स्थानीय भाषाओं के उज्ज्वल संभावनाएँ भी दृष्टिगत होती है। वैश्वीकरण एवं नई अर्थव्यवस्था के चलते स्थानीय भाषाओं के लिए अभूतपूर्व अवसर भी प्रदान करती है। डॉ. नवले का का मानना है कि भले ही वैश्वीकरण का आग्रह एक भाषा तथा एक सत्ता का हो, वैश्वीकरण की विकासोन्मुख धारा को सुदूर पहुँचाने में क्षेत्रीय तथा प्रादेशिक भाषाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहेगा।[9]डिजिटल लोकलाइज़ेशन, मोबाइल-आधारित सेवाएँ, ई-शासन, ई-कॉमर्सऔर क्षेत्रीय कंटेंट-उद्योग स्थानीय भाषाओं की प्रासंगिकता को बढ़ा रहे हैं। डिजिटल सेवाएं बहुभाषी डिजिटल पारिस्थितिकी के महत्त्व को रेखांकित कर रही है।साथ ही, क्षेत्रीय मीडिया, फिल्म, ओ.टी.टी.लोक-साहित्य और सांस्कृतिक उद्योगों के विस्तार ने स्थानीय भाषाओं की आर्थिक क्षमता को नई ऊँचाइयाँ प्रदान की हैं।कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण जहाँ स्थानीय भाषाओं के लिए चुनौती बना है वहाँ अवसर के लिए भी पर्याप्त गुंजाईश है। यदि भाषाई नीतियों, डिजिटल लोकलाइज़ेशन और शिक्षा-माध्यम में स्थानीय भाषाओं को सशक्त बनाया जाए, तो वे न केवल सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखेंगी, बल्कि नई अर्थव्यवस्था के विकास में सक्रिय भूमिका भी निभा सकेंगी, इसमें दो राय नहीं है ।

निष्कर्ष :

उक्त विवेचन विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण, उदारीकरण, डिजिटलीकरण और ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था ने 'नई अर्थव्यवस्था' की परिकल्पना को जन्म दिया है। नई अर्थव्यवस्था के प्राणवायू के रूप में भाषा का अनन्यसाधारण महत्त्व स्पष्ट रूप में उजागर हो रहा है। भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम न रहकर वह आर्थिक संसाधन, सांस्कृतिक पूँजी और सामाजिक सशक्तीकरण के मुख्य साधन के रूप में स्वयं का अस्तित्व सिद्ध कर रही है। जहाँ एक ओर भाषा के वैश्विक महत्त्व की बात आती है वहाँ स्थानीय भाषाओं की भूमिका और प्रासंगिकता नए सिरे से उभरकर सामने आ रही है, इस बात को स्वीकार करना पड़ेगा। कहना गलत न होगा कि नई अर्थव्यवस्था को समृद्ध एवं सुदृढ़ बनाने में भाषा की भूमिका रीढ़ की हड्डी की तरह दायित्व वहन करती हुई परिलक्षित होती है।स्पष्ट है कि नई अर्थव्यवस्था केवल तकनीक और पूँजी आधारित नहीं है, बल्कि उसका मुख्य जुड़ाव भाषा और संस्कृति से हैं । स्थानीय भाषाओं को हाशिए पर तथा अनदेखा कर राष्ट्रीय विकास की धारा के शाश्वत, स्थायी एवं

सर्वसमावेशी विकास की कल्पना नहीं की जा सकती।वैश्विक संदर्भ में नई अर्थव्यवस्था को मानवीय और जनकेंद्री बनाने के लिए स्थानीय भाषाओं को नीति, शिक्षा, तकनीक और बाजार आदि स्तरों पर सशक्त बनाने की आवश्यकता परिलक्षित होती ।

संदर्भ सूची -

1. Toffler, Alvin, *The Third Wave*। Bantam Books, 1980, पृष्ठ-125
2. नवले भाऊसाहेब, वैश्वीकरण एवं हिंदी का रोजगारोन्मुख परिदृश्य, निशा पब्लिकेशन, 2022, पृष्ठ-49
3. Devi, Ganesh,*Indian Multilinguality: Dimensions of Linguistic Diversity*, Orient Blackswan, 2019, पृष्ठ-42
4. Nehru, Jawaharlal,*The Discovery of India*, Oxford University Press, 1946, पृष्ठ-57
5. Sen, Amartya,Development as Freedom, Oxford University Press, 1999, पृष्ठ-128
6. Kachru, Braj,Language and Communication in India। Cambridge University Press, 2006, पृष्ठ-64
7. Kellner, Douglas,Cultural Politics and New Economy, Routledge, 2010, पृष्ठ-51
8. UNESCO,*Global Education Monitoring Report*, UNESCO Publishing, 2020, पृष्ठ-134
9. नवले भाऊसाहेब, वैश्वीकरण एवं हिंदी का रोजगारोन्मुख परिदृश्य, निशा पब्लिकेशन, 2022, पृष्ठ-30

• **Copyright & License:**
© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.